थारे घट में विराजे भगवान बाहर काई जोवती फिरे लिरिक्स

थारे घट में विराजे भगवान,
बाहर काई जोवती फिरे।bd।

नो नहाई नौरता,
दसवे नहाई काती,
हरी नाम की सुध नही लेवे,
फिरे गलियों में नाती,
पीपल रे डोरा बांधती फिरे,
थारे घट मे विराजे भगवान,
बाहर काई जोवती फिरे।bd।

जीवित मात् री सुध न लेवे,
मरिया गंगाजी जावे,
वो सराधा में बोले का कागलो,
बापू के बतलावे,
आकारा पता उड़ती फिरे,
थारे घट मे विराजे भगवान,
बाहर काई जोवती फिरे।bd।

पत्थर की रे बनी मूर्ति,
वह मुख से नहीं बोले,
शामे बैठो मस्त पुजारी,
वह दरवाजे नहीं खोले,
चंदन का टीका काटती फिरे,
थारे घट मे विराजे भगवान,
बाहर काई जोवती फिरे।bd।

रामानंद मिला गुरु पूरा,
जीव भरम रा तो ले,
कहत कबीर सुनो भाई संतो,
पर्वत के राई तो ले,
पर्वत तेरी छाया जोवती फिरे,
थारे घट मे विराजे भगवान,
बाहर काई जोवती फिरे।bd।

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com

थारे घट में विराजे भगवान,
बाहर काई जोवती फिरे।bd।

गायक – अनिल नागोरी।
प्रेषक – राजश्री बिशनोई।
कुड़च्छी 9414941629

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com